नीरा

जीवन परिचय

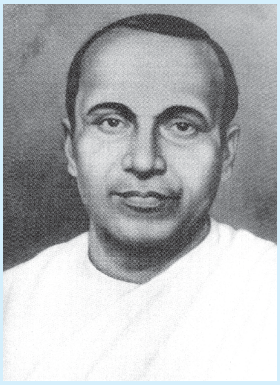

जयशंकर प्रसाद

आधुनिक हिन्दी साहित्य के आधार स्तम्भ एवं छायावादी काव्य के प्रवर्तक श्री जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी (उ.प्र.) के प्रसिद्ध 'सुंघनी साहू' परिवार में 30 जनवरी सन् 1889 ई. को हुआ था। अल्प आयु में पिता की मृत्यु हो जाने पर इन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

प्रसाद जी का कविरूप अधिक प्रसिद्ध रहा है । इसके अतिरिक्त इन्होंने अनेक महत्वपूर्ण नाटक, कहानी एवं निबंधों का सृजन किया है ।

प्रसादजी ने नाटकों के अतिरिक्त उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं। अधिकांश रचनाओं में भारतीय संस्कृति की गौरव-गाथा के दर्शन होते हैं। ग्रामीण-परिवेश एवं मानवीय-मूल्यों से जुड़ी इनकी रचनाएँ आदर्शों के प्रतिमान स्थापित करती हैं । 15 नवंबर सन् 1937 ई. को प्रसाद-युग के इस प्रसिद्ध रचनाधर्मी का निधन हो गया।

प्रसाद जी की प्रमुख रचनाओं में -

उपन्यास- कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)।

केंद्रीय भाव:- यह कहानी अभाव और आस्था के मध्य संघर्षरत पात्र की व्यथा-कथा है। सामाजिक विषमता के कठोर आघातों ने उसे नास्तिक बना दिया है। उसकी नास्तिकता विचार युक्त नहीं है, बल्कि अपने ही कृत्यों से प्राप्त दुखों की प्रतिक्रिया है। यदि गहराई से देखा जाए तो यह उसकी आस्तिकता का ही एक रूप है क्योंकि अपने कष्टों के लिए वह अन्ततः ईश्वर को उत्तरदायी समझकर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है। नीरा इसी बूढ़े बाबा की मातृहीन पुत्री है। बूढ़ा अभावग्रस्त है पर अत्यंत जागरूक भी है। अतीत का कटु अनुभव उसे अपनी पुत्री नीरा की सुरक्षा के प्रति चिंतित बनाए हुए है। कहानी के अन्य पात्र अमरनाथ की और देवनिवास से बूढ़े बाबा की भेंट अनायास होती है। अमरनाथ को उसकी नास्तिकता से चिढ़ है पर देवनिवास को उससे और नीरा से सहानुभूति है। अमरनाथ विभिन्न तर्कों से बूढ़े की नास्तिकता को धिक्कारता है पर बूढ़े के विचार नहीं बदल पाता। देवनिवास एक बार फिर बूढ़े के पास जाकर उसकी व्यथा-कथा सुनता है और अचानक नीरा के साथ विवाह का प्रस्ताव रखकर बूढ़े बाबा को चौंका देता है । जो काम देवनिवास के अकाट्य तर्क नहीं कर पाते उसे देवनिवास का साधारण किंतु सार्थक कर्म संभव बना देता है। देवनिवास का निस्वार्थ प्रस्ताव बूढ़े बाबा के मन में संतोष और विश्वास के साथ-साथ एक बार फिर ईश्वर के प्रति गहरी आस्था जगा देता है।

अब और आगे नहीं, इस गंदगी में कहाँ चलते हो, देवनिवास? थोड़ी दूर और - कहते हुए देवनिवास ने अपनी साइकिल धीमी कर दी, किंतु विरक्त अमरनाथ ने ब्रेक दबाकर ठहर जाना ही उचित समझा। देवनिवास आगे निकल गया। मौलसिरी का वह सघन वृक्ष था, जो पोखर के किनारे अपनी अंधकारमयी छाया डाल रहा था। पोखरे से सड़ी हुई दुर्गंध आ रही थी। देवनिवास ने पीछे घूमकर देखा, मित्र को वहीं रुका देखकर वह लौट रहा था। उसकी साइकिल का लैम्प बुझ चला था। सहसा धक्का लगा, देवनिवास तो गिरते-गिरते बचा और एक दुर्बल मनुष्य 'अरे राम' कहता हुआ गिरकर भी उठ खड़ा हुआ। बालिका उसका हाथ पकड़कर पूछने लगी - कहीं चोट तो नहीं लगी बाबा?

नाटक – चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, घूँट,(एकांकी) अग्निमित्र, राज्यश्री, विशाख, ध्रुव–स्वामिनी।

काव्य–कृतियाँ – कामायनी (महाकाव्य) आँसू, झरना, प्रेमपथिक, कानन–कुसुम, अयोध्या का उद्धार, महाराणा का महत्व आदि।

निबंध/विविध – चित्राधार, काव्य और कला तथा अन्य निबंध।

प्रसादजी ने कुल 66 कहानियाँ लिखी हैं जो छाया (1921), प्रतिध्वनि (1926), आँधी (1931) में संकलित हैं।

जयशंकर प्रसाद की भाषा–शैली स्वाभाविक और यथार्थपरक है। रचनाओं में मानव–मनोविज्ञान के सूक्ष्म–विश्लेषण वाले चित्र मिलते हैं। रचनाओं में नए–नए प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। भाषा अलंकारिक और संस्कृतनिष्ठ बन पड़ी है। भाषा में आवश्यकतानुसार उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया हैं।

हिंदी साहित्य के छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद का प्रमुख नाम है। वे साहित्य जगत् के आधार स्तंभ हैं ।

नहीं बेटी! मैं कहता न था, मुझे मोटरों से उतना डर नहीं लगा, जितना इस बे–दुम के 'जानवर' साइकिल से। मोटर वाले तो दूसरों को ही चोट पहुँचाते हैं, पैदल चलने वालों को कुचलते हुए निकल जाते हैं, पर ये बेचारे तो आप ही गिर पड़ते हैं। क्यों बाबू साहब आपको तो चोट नहीं लगी? हम लोग तो चोट–घाव सह सकते हैं।

देवनिवास कुछ झेंप गया था। उसने बूढ़े से कहा – आप मुझे क्षमा कीजिए। आपको.....।

क्षमा – मैं करूँ? अरे आप क्या कह रहे हैं। दो–चार हंटर आपने नहीं लगाए। घर भूल गए, हंटर नहीं ले आए। अच्छा महोदय! आपको कष्ट हुआ न, क्या करूँ, बिना भीख माँगे इस सर्दी में पेट गालियाँ देने लगता है। नींद भी नहीं आती, चार–छः पहरों पर तो कुछ–न–कुछ इसे देना ही पड़ता है, और भी मुझे एक रोग है, दो पैसों बिना वह नहीं छूटता– पढ़ने के लिए अख़बार चाहिए, पुस्तकालयों में चिथड़े पहनकर बैठने ना पाऊँगा, इसलिए नहीं जाता। दूसरे दिन का बासी समाचार–पत्र दो पैसों में ले लेता हूँ।

अमरनाथ भी पास आ गया था। उसने यह काण्ड देखकर हँसते हुए कहा–'देवनिवास!' मैं मना करता था न! तुम अपनी धुन में कुछ सुनते भी हो। चले तो फिर चले, और रुके तो अड़ियल टट्टू भी झक मारे! क्या उसे कुछ चोट आ गई है? क्यों बूढ़े! लो, यह अठन्नी है। जाओ अपनी राह, तनिक देखकर चला करो!

बूढ़ा मसखरा भी था। अठन्नी लेते हुए उसने कहा – देखकर चलता, तो यह अठन्नी कैसे मिलती! तो भी बाबूजी, आप लोगों की जेब में अख़बार होगा। मैंने देखा है, बाइसिकिल पर चढ़े हुए बाबुओं के पाकेट में निकला हुआ काग़ज़ का मुट्ठा, अख़बार ही रहता होगा।

चलो बाबा, झोंपड़ी में सर्दी लगती है। – वह सरल–सी बालिका अपने बाबा को जैसे इस तरह बातें करते हुए देखना नहीं चाहती। यह संकोच में डूबी जा रही थी, देवनिवास चुप था। बुड्ढे को जैसे तमाचा लगा। वह अपने दयनीय और घृणित भिक्षा–व्यवसाय को बहुधा नीरा से छिपाकर, बनाकर कहता। उसे अख़बार सुनाता और भी न जाने क्या–क्या ऊँची–नीची बातें बका करता, नीरा जैसे सब समझती थी। वह कभी बूढ़े से प्रश्न नहीं करती थी। जो कुछ वह कहता, चुपचाप सुन लिया करती थी। कभी–कभी बुड्ढा झुँझलाकर चुप हो जाता, तब भी वह चुप रहती। बूढ़े को आज ही नीरा ने झोंपड़ी में चलने के लिए कहकर पहले–पहल मीठी झिड़की दी। उसने सोचा, कि अठन्नी पाने पर भी अख़बार माँगना नीरा न सह सकी।

अच्छा तो बाबूजी, भगवान यदि कोई हों, तो आपका भला करें – बुड्ढा लड़की का हाथ पकड़कर मौलसिरी की ओर चला। देवनिवास सन्न था। अमरनाथ ने अपनी साइकिल के उज्ज्वल आलोक में देखा–नीरा एक गोरी–सी सुंदरी, पतली–दुबली करुणा की

छाया थी। दोनों मित्र चुप थे। अमरनाथ ने ही कहा–अब लौटेंगे कि यहीं गड़ गए!

तुमने कुछ सुना अमरनाथ! वह कहता था –भगवान यदि कोई हों–कितना भयानक अविश्वास! देवनिवास ने साँस लेकर कहा।

दरिद्रता और लगातार दु:खों से मनुष्य अविश्वास करने लगता है। निवास! यह कोई नई बात नहीं है–अमरनाथ ने चलने की उत्सुकता दिखाते हुए कहा।

किंतु देवनिवास तो जैसे आत्मविस्मृत था। उसने कहा–सुख और सम्पत्ति में क्या ईश्वर का विश्वास अधिक होने लगता है? क्या मनुष्य ईश्वर को पहचान लेता है? उसकी व्यापक सत्ता को मलिन वेश में देखकर दुरदुराता नहीं–ठुकराता नहीं अमरनाथ! अब की बार 'आलोचक' के विशेषांक में तुमने लौटे हुए प्रवासी कुलियों के संबंध में एक लेख लिखा था न! वह सब कैसे लिखा था?

अख़बारों से आँकड़े देखकर! मुझे ठीक–ठाक स्मरण है। कब, किस द्वीप में कौन–कौन स्टीमर किस तारीख़ में चले। 'सतलज', 'पंडित' और 'ऐलिफैंटा,' नाम के स्टीमरों पर कितने–कितने कुली थे, मुझे ठीक–ठाक मालूम था, और?

और वे सब कहाँ हैं?

सुना है, इसी कलकत्ते के पास कहीं मटियाबुर्ज है, वहीं अभागों का निवास है! अवध के नवाब का विलास या प्रायश्चित–भवन भी तो मटियाबुर्ज ही रहा। मैंने उस लेख में भी एक व्यंग्य इस पर बड़े मार्के का दिया है। चलो, खड़े–खड़े बातें करने की जगह नहीं। तुमने तो कहा था कि आज जनाकीर्ण कलकत्ते से दूर तुमको एक अच्छी जगह दिखाऊँगा। यहीं'''

यही मटियाबुर्ज है। देवनिवास ने बड़ी गंभीरता से कहा–अब तुम कहोगे कि यह बुड्ढा वहीं से लौटा हुआ कोई कुली है।

हो सकता है, मुझे नहीं मालूम। अच्छा, चलो अब लौटें।–कहकर अमरनाथ ने अपनी साइकिल को धक्का दिया।

देवनिवास ने कहा–चलो उसकी झोपड़ी तक, मैं उससे कुछ बात करूँगा।

अनिच्छापूर्वक 'चलो' कहते हुए अमरनाथ ने मौलसिरी की ओर साइकिल घुमा दी। साइकिल के तीव्र आलोक में झोपड़ी के भीतर का दृश्य दिखाई दे रहा था। बुड्ढा मनोयोग से लाई फाँक रहा था और नीरा भी कल की बची हुई रोटी चबा रही थी। रूखे ओठों पर दो एक–दाने चिपक गए थे, जो उस दरिद्र मुख में जाना अस्वीकार कर रहे थे! टीन का गिलास अपने खुरदुरे रंग का नीलापन नीरा की आँखों में उड़ेल रहा था। आलोक एक उज्ज्वल सत्य है, बंद आँखों में भी उसकी सत्ता छिपी नहीं रहती। बुड्ढे ने आँखें खोलकर दोनों बाबुओं को देखा। वह बोल उठा–बाबूजी! आप अख़बार देने आए हैं? मैं अभी पथ्य ले रहा था, बीमार हूँ न, इसी से लाई खाता हूँ, बड़ी नमकीन होती है। अख़बार वाले भी कभी–कभी नमकीन बातों का स्वाद दे देते हैं। इसी से तो, बेचारे कितने दूर–दूर की बातें सुनाते हैं। जब मैं 'मॉरिशस' में था, तब हिंदुस्तान की बातें पढ़ा करता था। मेरा देश सोने का है, ऐसी भावना जग उठती थी। अब कभी–कभी उस टापू की बातें पढ़ पाता हूँ, तब यह मिट्टी मालूम पड़ता है; पर सच कहता हूँ बाबूजी, 'मॉरिशस' में अगर गोली न चली होती

और 'नीरा' की माँ न मरी होती–हाँ, गोली से ही वह मरी थी–तो मैं अब तक वहीं से जन्मभूमि का सोने का सपना देखता; और इस अभागे देश! नहीं–नहीं बाबूजी, मुझे यह कहने का अधिकार नहीं है। मैं हूँ अभागा! हाय रे भाग!

'नीरा' घबरा उठी थी। उसने किसी तरह दो घूँट जल गले से उतारकर इन लोगों की ओर देखा। उसकी आँखें कह रही थीं कि, 'जाओ मेरी दरिद्रता का स्वाद लेने वाले धनी विचारको और सुख तो तुम्हें मिलते ही हैं, एक न सही!'

अपने पिता को बातें करते देखकर वह घबरा उठी थी। वह डरती थी कि पिताजी न जाने क्या– क्या कह बैठेंगे। देवनिवास चुपचाप उसका मुँह देखने लगा।

नीरा बालिका न थी। फिर भी जैसे दरिद्रता के भीषण हाथों ने उसे दबा दिया था सीधी ऊपर नहीं उठने पाई।

क्या तुमको ईश्वर में विश्वास नहीं है?–अमरनाथ ने गंभीरता से पूछा।

'आलोचक' में मैंने एक लेख पढ़ा था। वह इसी प्रकार के उलाहनों से भरा था कि 'वर्तमान जनता में ईश्वर के प्रति अविश्वास का भाव बढ़ता जा रहा है और इसलिए वह दु:खी है।' यह पढ़कर मुझे तो हँसी आ गई।–बुड्ढे ने अविचल भाव से कहा। हँसी आ गई। कैसे दु:ख की बात है। –अमरनाथ ने कहा।

दु:ख की बात सोचकर ही तो हँसी आ गई। हम मूर्ख मनुष्यों ने त्राण की आशा से ईश्वर पर पूर्वकाल में विश्वास किया था; परस्पर विश्वास और सद्भाव को ठुकराकर। मनुष्य, मनुष्य का विश्वास नहीं कर सका; इसीलिए तो एक सुखी दूसरे दु:खी की ओर घृणा से देखता था। दु:ख ने ईश्वर का अवलंबन लिया, तो भी भगवान ने संसार के दु:खों की सृष्टि बंद कर दी क्या? मनुष्य के बूते का न रहा, तो क्या वह भी ! कहते–कहते बूढ़े की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं; किंतु वे अग्निकण गलने लगे और उसके कपोलों के गढ़े में वह द्रव इकट्ठा होने लगा।

अमरनाथ क्रोध से बुड्ढे को देख रहा था; किंतु देवनिवास उस मलिना नीरा की उत्कण्ठा और खेदभरी मुखाकृति का अध्ययन कर रहा था।

आपको क्रोध आ गया, क्यों महाशय! आने की बात ही है। ले लीजिए अपनी अठन्नी। अठन्नी देकर ईश्वर में विश्वास नहीं कराया जाता। उस चोट के बारे में पुलिस में जाकर न कहने के लिए भी अठन्नी की आवश्यकता नहीं। ऐश्वर्य वालों को, जिन पर भगवान की पूर्ण कृपा है, अपनी सहृदयता से ईश्वर का विश्वास कराने का प्रयत्न करना चाहिए। कहिए, इस तरह भगवान की समस्या सुलझाने के लिए आप प्रस्तुत हैं।

इस बूढ़े नास्तिक और तार्किक से अमरनाथ को तीव्र विरक्ति हो चली। अब वह चलने के लिए देवनिवास से कहने वाला था; किंतु उसने देखा, वह तो झोपड़ी में आसन जमाकर बैठ गया है।

अमरनाथ को चुप देखकर देवनिवास ने बूढ़े से कहा–अच्छा तो आप मेरे घर चलकर रहिए। संभव है कि मैं आपकी सेवा कर सकूँ। तब आप विश्वासी बन जाएँ तो कोई आश्चर्य नहीं।

इस बार तो वह बुड्ढा बुरी तरह देवनिवास को घूरने लगा। देवनिवास वह तीव्र दृष्टि सह न सका। उसने समझा कि मैंने चलने के लिए कहकर बूढ़े को चोट पहुँचाई है। वह बोल उठा–क्या आप–?

ठहरो भाई तुम बड़े जल्दबाज़ मालूम होते हो – बूढ़े ने कहा – क्या सचमुच तुम सेवा करना चाहते हो या–?

अब बूढ़ा नीरा की ओर देख रहा था और नीरा की आँखें बूढ़े को आगे ना बोलने की शपथ दिला रही थीं; किंतु उसने फिर कहा ही–या नीरा को जिसे तुम बड़ी देर से देख रहे हो, अपने घर लिवा जाने की बड़ी उत्कण्ठा है! क्षमा करना, मैं अविश्वासी हो गया हूँ न! क्यों, जानते हो? जब कुलियों के लिए इसी सीली, गंदी और दुर्गंधमयी भूमि में एक सहानुभूति उत्पन्न हुई थी, तब मुझे यह कटु अनुभव हुआ था कि वह सहानुभूति भी चिरायँध से खाली न थी। मुझे एक सहायक मिले थे और मैं यहाँ से थोड़ी दूर पर उनके घर रहने लगा था।

नीरा से अब न रहा गया। वह बोल उठी–बाबा, चुप न रहोगे, खाँसी आने लगेगी।

ठहर नीरा! हाँ तो महाशय जी, मैं उनके घर रहने लगा था और उन्होंने मेरा आतिथ्य साधारणत: अच्छा ही किया। एक ऐसी ही काल रात थी। बिजली बादलों में चमक रही थी और मैं पेट भरकर ठंडी रात में सुख की झपकी लेने लगा था। इस बात को बरसों हुए; तो भी मुझे ठीक स्मरण है कि मैं जैसे भयानक सपना देखता हुआ चौंक उठा। नीरा चिल्ला रही थी क्यों नीरा?

अब नीरा हताश हो गई थी और उसने बूढ़े को रोकने का प्रयास छोड़ दिया था। वह एकटक बूढ़े का मुँह देख रही थी।

बुड्ढे ने फिर कहना प्रारंभ किया–हाँ, तो नीरा चिल्ला रही थी। मैं उठकर देखता हूँ, तो मेरे वह परम सहायक महाशय इसी नीरा को दोनों हाथों से पकड़कर घसीट रहे थे और यह बेचारी छूटने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही थी। मैंने अपने दोनों दुर्बल हाथों को उठाकर उस नीच उपकारी के ऊपर दे मारा। वह नीरा को छोड़कर, 'निकल मेरे घर से' कहता हुआ मेरा अकिंचन सामान बाहर फेंकने लगा। बाहर ओलों–सी बूँदें पड़ रही थीं और बिजली कौंधती थी। मैं नीरा को लिए सर्दी से दाँत किटकिटाता हुआ एक ठूँठ वृक्ष के नीचे रात–भर बैठा रहा। उस समय वह मेरा ऐश्वर्यशाली सहायक बिजली के लैम्पों की गर्मी में मुलायम गद्दे पर सुख की नींद सो रहा था। यद्यपि मैं उसे लौटकर देखने नहीं गया, तो भी मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ, कि उसे सुख में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित करने का दण्ड देने के लिए भगवान का न्याय अपने भीषण रूप में नहीं प्रकट हुआ। मैं रोता था–पुकारता था किंतु वहाँ सुनता कौन है।

तुम्हारा बदला लेने के लिए भगवान नहीं आए, इसीलिए तुम अविश्वास करने लगे! लेखकों की कल्पना का साहित्यिक न्याय तुम सर्वत्र प्रत्यक्ष देखना चाहते हो न! निवास ने तत्परता से कहा।

क्यों न मैं ऐसा चाहता? क्या मुझे इतना भी अधिकार न था?

तुम समाचार–पत्र पढ़ते हो न!

अवश्य।

तो उसमें कहानियाँ भी कभी–कभी पढ़ लेते होगे और उनकी आलोचनाएँ भी।

हाँ, तो फिर!

जैसे एक साधारण आलोचक प्रत्येक लेखक से अपने मन की कहानी कहलाना चाहता है और हठ करता हैं। कि नहीं यहाँ तो ऐसा नहीं होना चाहिए था, ठीक उसी तरह तुम सृष्टिकर्ता से अपने जीवन की घटनावली अपने मनोनुकूल सही कराना चाहते हो। महाशय मैं भी इसका अनुभव करता हूँ, कि सर्वत्र यदि पापों का भीषण दण्ड तत्काल ही मिल

जाया करता , तो यह सृष्टि पाप करना छोड़ देती। किंतु वैसा नहीं हुआ। उलटे यह एक व्यापक और भयानक मनोवृत्ति बन गई है, कि मेरे कष्टों का कारण कोई दूसरा है। इस तरह मनुष्य अपने कर्मों को सरलता से भूल सकता है। क्या तुमने कभी अपने अपराधों पर विचार किया है?

देवनिवास बड़े वेग से बोल रहा था। बुड्ढा न जाने क्यों काँप उठा? साइकिल का तीव्र आलोक उसके विकृत मुख पर पड़ रहा था। बुड्ढे का सिर धीरे-धीरे नीचे झुकने लगा। नीरा चौंककर उठी और एक फटा-सा कम्बल उस बुड्ढे को ओढ़ाने लगी। सहसा बुड्ढे ने सिर उठाकर कहा-मैं इसे मान लेता हूँ कि आपके पास बड़ी अच्छी युक्तियाँ हैं और उनके द्वारा मेरी वर्तमान दशा का कारण आप मुझे ही प्रमाणित कर सकते हैं। किंतु वृक्ष के नीचे पुआल से ढँकी हुई मेरी झोपड़ी को और उसमें पड़े हुए अनाहार, सर्दी और रोगों से जीर्ण मुझ अभागे को मेरा ही भ्रम बताकर आप किसी बड़े भारी सत्य का आविष्कार कर रहे हैं, तो कीजिए। जाइए, मुझे क्षमा कीजिए।

देवनिवास कुछ बोलने ही वाला था कि नीरा ने दृढ़ता से कहा-आप लोग क्यों बाबा को तंग कर रहे हैं? अब उन्हें सोने दीजिए।

देवनिवास ने देखा कि नीरा के मुख पर आत्मनिर्भरता और संतोष की गंभीर शांति है। नीरा का हृदय, नीरा का मस्तिष्क इस किशोर-अवस्था में ही, कितना उदासीन और शांत है! वह मन-ही-मन नीरा के सामने प्रणत हुआ।

दोनों मित्र उस झोपड़ी से निकले। रात अधिक बीत चली थी। वे कलकत्ता महानगरी की घनी बस्ती में धीरे-धीरे साइकिल चलाते हुए घुसे। दोनों का हृदय भारी था। वे चुप थे।

देवनिवास का मित्र कच्चा नागरिक नहीं था। उसको अपने आँकड़ों का और उनके उपयोग पर पूरा विश्वास था। वह सुख और दु:ख, दरिद्रता और वैभव, कटुता और मधुरता की परीक्षा करता। जो उसके काम के होते, उन्हें सँभाल लेता फिर अपने मार्ग पर चल देता। सार्वजनिक जीवन का खेल रचने में वह पूरा खिलाड़ी था। देवनिवास के आतिथ्य का उपभोग करके अपने लिए कुछ मसाला जुटाकर वह चला गया।

किंतु देवनिवास की आँखों में, उस रात्रि के बूढ़े की झोपड़ी का दृश्य अपनी छाया ढालता ही रहा। एक सप्ताह बीतने पर वह फिर उसी ओर चला।

झोपड़ी में बुड्ढा पुआल पर पड़ा था। उसकी आँखें कुछ बड़ी हो गई थीं, ज्वर से लाल थीं देवनिवास को देखते ही एक रुग्ण हँसी उसके मुख पर दिखाई दी। उसने धीरे से पूछा-बाबूजी, आज फिर...।

नहीं, मैं वाद-विवाद नहीं करने आया हूँ तुम क्या बीमार हो?

हाँ, बीमार हूँ बाबूजी और यह आपकी कृपा है।

मेरी?

हाँ उसी दिन से आपकी बातें मेरे सिर में चक्कर काटने लगी हैं। मैं ईश्वर पर विश्वास करने की बात सोचने लगा हूँ। बैठ जाइए सुनिए।

देवनिवास बैठ गया था। बुड्ढे ने फिर कहना आरंभ किया-मैं हिंदू हूँ। कुछ सामान्य पूजापाठ का प्रभाव मेरे हृदय

पर पड़ता रहा, जिन्हें मैं बाल्यकाल में अपने घर पर पर्वों और उत्सवों पर देख चुका था। मुझे ईश्वर के बारे में कभी कुछ बताया नहीं गया। अच्छा, जाने दीजिए, वह मेरी लंबी कहानी है, मेरे जीवन की संसार से झगड़ते रहने की कथा है। अपनी घोर आवश्यकताओं से लड़ता-झगड़ता मैं मॉरीशस पहुँचा। वहाँ 'कुलसम' (नीरा की माँ) से मेरी भेंट हो गई मेरा-उसका ब्याह हो गया। आप हँसिए मत, कुलियों के लिए वहाँ किसी काजी या पुरोहित की उतनी आवश्यकता नहीं। कुलसम ने मेरा घर बसाया।

पहले वह चाहे जैसी रही, किंतु मेरे साथ संबंध होने के बाद से आजीवन वह एक साध्वी गृहिणी बनी रही। कभी-कभी वह अपने ढंग पर ईश्वर का विचार करती और मुझे भी इसके लिए प्रेरित करती, किंतु मेरे मन में जितना कुलसम के प्रति आकर्षण था, उतना ही उसके ईश्वर-संबंधी विचारों से विद्रोह। मैं 'कुलसम' के ईश्वर को तो कदापि नहीं समझ सका। मैं पुरुष होने की धारणा से यह तो सोचता था कि 'कुलसम' वैसा ही ईश्वर माने, जैसा उसे मैं समझ सकूँ और वह मेरा ईश्वर हिंदू हो क्योंकि मैं सब छोड़ सकता था, लेकिन हिंदू होने का विचार मेरे मन में दृढ़ता से जम गया था, तो भी समझदार कुलसम के सामने ईश्वर की कल्पना अपने ढंग की, उपस्थित करने का मेरे पास कोई साधन न था। मेरे मन ने ढोंग किया कि, मैं नास्तिक हो जाऊँ। जब कभी ऐसा अवसर आता, मैं कुलसम के विचारों की खिल्ली उड़ाता हुआ हँसकर कह देता-तो मेरे लिए तुम्हीं ईश्वर हो, खुदा हो, तुम ही सबकुछ हो। वह मुझे चापलूसी करते हुए देखकर हँस तो देती थी किंतु उसका रोआँ-रोआँ रोने लगता।

मैं अपनी गाढ़ी कमाई के रुपयों को व्यसनों में गँवा मस्त रहता। मेरे लिए वह भी कोई विशेष बात न थी। न तो मेरे लिए नास्तिक बनने में ही कोई विशेषता थी। धीरे-धीरे मैं उच्छृंखल हो गया। कुलसम रोती बिलखती और मुझे समझाती किंतु मुझे यह सब बातें व्यर्थ की सी जान पड़तीं। मैं अधिक अविचारी हो उठा। मेरे जीवन का वह भयानक परिवर्तन बड़े वेग से आरंभ हुआ। कुलसम उस कष्ट को सहन करने के लिए जीवित न रह सकी। उस दिन जब गोली चली थी, तब कुलसम के वहाँ जाने की आवश्यकता न थी। मैं सच कहता हूँ बाबूजी, वह आत्महत्या करने का उसका एक नया ढंग था। मुझे विश्वास होता है कि मैं ही इसका कारण था। इसके बाद मेरी वह सब उद्दण्डता तो नष्ट हो गई थी, जीवन की पूँजी जो मेरा निज का अभिमान था-वह भी चूर-चूर हो गया था। मैं नीरा को लेकर भारत के लिए चल पड़ा। तब तक तो मैं ईश्वर के संबंध में एक उदासीन नास्तिक था , किंतु इस दुःख ने मुझे विद्रोही बना दिया। मैं अपने कष्टों का कारण ईश्वर को ही समझने लगा और मेरे मन में यह बात जम गई कि यह मुझे दण्ड दिया गया है।

बुड्ढा व्याकुल हो उठा था। उसका दम फूलने लगा, खाँसी आने लगी। नीरा मिट्टी के घड़े में जल लिए हुए झोपड़ी में आई। उसने देवनिवास को और अपने पिता को अन्वेषक दृष्टि से देखा। यह समझ लेने पर कि दोनों में से किसी के मुख पर कटुता नहीं है, वह प्रकृतिस्थ हुई। धीरे-धीरे पिता का सिर सहलाते हुए उसने पूछा-बाबा, लावा ले आई हूँ, कुछ खा लो।

बुड्ढे ने कहा-ठहरो बेटी फिर देवनिवास की ओर देखकर कहने लगा-बाबूजी उस दिन भी जब नीरा के लिए मैंने भगवान को पुकारा था, तब उसी कटुता से। संभव है, इसीलिए वे न आए हों। आज कई दिनों से मैं भगवान को समझाने की चेष्टा कर रहा हूँ। नीरा के लिए मुझे बड़ी चिंता हो रही है। वह क्या करेगी? किसी अत्याचारी के हाथ पड़कर नष्ट तो न हो जाएगी?

देवनिवास कुछ बोलने को था, कि नीरा कह उठी-बाबा, तुम मेरी चिंता न करो, भगवान मेरी रक्षा करेंगे।

देवनिवास की अंतरात्मा पुलकित हो उठी। बुड्ढे ने कहा-करेंगे बेटी? उसके मुख पर एक व्याकुल प्रसन्नता झलक उठी। निवास ने बूढ़े की ओर देखकर विनीत स्वर में कहा-मैं नीरा से ब्याह करने के लिए प्रस्तुत हूँ। यदि तुम्हें...।

बूढ़े को अब की खाँसी के साथ ढेर सा रक्त गिरा, तो भी उसके मुँह पर संतोष और विश्वास की प्रसन्न-लीला खिलने लगी।

उसने अपने दोनों हाथ देवनिवास और नीरा पर फैलाकर रखते हुए कहा-हे मेरे भगवान।

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नीरा के पिता को क्या पढ़ने का शौक़ था?
2. अमरनाथ ने अपना लेख किस विषय पर लिखा था?
3. नीरा के पिता कुली बनकर कहाँ गए थे?
4. नीरा की माँ का क्या नाम था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ''भगवान यदि हों तो आपका भला करें,'' कहने के पीछे नीरा के पिता बूढ़े बाबा के किस भाव का आभास होता है?
2. नीरा के पिता को किस बात की चिंता थी?
3. अपराधों का दण्ड तत्काल न मिलने का क्या परिणाम हुआ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. देवनिवास नीरा के किन गुणों से प्रभावित है?
2. कहानी का शीर्षक 'नीरा' कितना सार्थक है?
3. देवनिवास या बूढ़े बाबा, नीरा के पिता के चरित्र के आधार पर सिद्ध कीजिए कि यह कहानी अपने पात्रों के चरित्र – चित्रण में सफल रही है।
4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

   1. सुख और सम्पत्ति.....ठुकराता नहीं।

   2. जैसे एक साधारण.....कराना चाहते हो।

5. निम्नलिखित पंक्ति का भाव पल्लवन कीजिए :

   ''आलोक एक उज्ज्वल सत्य है।''

6. जो काम देवनिवास अपने तर्कों से नहीं कर सका उसे उसके कर्म ने संभव बना दिया। बूढ़े बाबा के नास्तिक से आस्तिक बनने के घटनाक्रम को दृष्टिगत रखते हुए इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

भाषा अध्ययन–

1. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

   ढोंग रचना, बिजली कौंधना, दाँत किटकिटाना, चौंक उठना, सुख की नींद सोना।

आइए समझिए-

प्रश्नवाचक चिह्न - ?

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है-

1. जहाँ वाक्य में प्रश्नवाचक शब्दों जैसे कब, कहाँ, कैसे, क्यों, क्या का प्रयोग करते हुए प्रश्न पूछा जाता है।

   जैसे - आप कहाँ जा रहे हैं ?

2. व्यंग्यात्मक भाव प्रकट करने के लिए भी सामान्य कथन के बाद प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग होता है।

   जैसे-आप जैसा धर्मात्मा पैदा ही नहीं हुआ ?

3. कभी-कभी सामान्य वाक्य में प्रश्न, संदेह या अनुमान परिवर्तन के लिए भी प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग करते हैं, जैसे- मैं झूठ बोल रहा हूँ ?

विस्मयादिबोधक चिह्न

विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग प्राय: आश्चर्य, घृणा, प्रसन्नता आदि मनोभावों को प्रकट करने वाले विस्मयवाचक शब्दों के बाद करते हैं।

जैसे - अरे !. तुम जा रहे हो।

वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

संबोधन में भी संबोधन शब्द के बाद यह चिह्न आता है, जैसे-मित्रों! मुझे बहुत प्रसन्नता है कि ... ।

2. निम्नलिखित वाक्यों में यथा स्थान विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।

   अ. क्षमा मैं करूँ अरे आप क्या कह रहे हैं।

   ब. नहीं नहीं बाबूजी मुझे यह कहने का अधिकार नहीं। मैं हूँ अभागा हाय रे भाग।

ध्यान दीजिए- समझिए

एक वृद्ध धीरे-धीरे चल रहा था। वह बहुत दिनों से बीमार था। घर-घर घूमकर सामान बेचता रहता था। एक दिन उसके बच्चे ने बार-बार बाहर जाने के लिए मना किया, किंतु वह नहीं माना और बाहर निकल गया । वृद्ध हँस-हँसकर बच्चों से बात करता और लाल-लाल, छोटे-छोटे खिलौने उनकी रुचि के अनुसार आसानी से बेचने में सफल हो जाता। उस दिन उसने द्वार-द्वार जाकर सामान बेचा। शाम को जब घर वापस आया तो वह प्रसन्न था। क्योंकि वह बहुत पैसा कमा कर लाया था।

यहाँ रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। ये शब्द दोहराए गए हैं- ऐसे शब्दों को समझिए।

एक ही उक्ति शब्द जब दो बार उच्चरित होती है, तो उसे द्विरुक्ति कहते हैं। इनकी रचना सार्थक शब्दों की आवृत्ति से होती है। द्विरुक्ति का आशय भी दोहराना है।

शब्दों की द्विरुक्ति निम्नलिखित प्रकार की हो सकती है

1. संज्ञा शब्द की द्विरुक्ति - घर-घर, द्वार-द्वार
2. सर्वनाम शब्द की द्विरुक्ति - अपना-अपना
3. विशेषण की द्विरुक्ति - छोटे-छोटे, लाल-लाल
4. क्रिया विशेषण संबंधी द्विरुक्ति - धीरे-धीरे

5.	क्रिया शब्द की द्विरुक्ति	–	आते-आते, जाते-जाते
6.	विस्मयादिबोधक शब्द की द्विरुक्ति	–	हरे-हरे, राम-राम।
7.	विभक्ति शब्द की द्विरुक्ति	–	गाँव-का-गाँव, पास-ही-पास

3. प्रस्तुत पाठ में निम्नलिखित द्विरुक्ति वाले शब्दों का प्रयोग हुआ है। उनमें से यह शब्द किस प्रकार की द्विरुक्ति के अंतर्गत आते हैं। लिखिए

गिरते-गिरते, खड़े-खड़े, कुछ-न-कुछ, कभी-कभी, कौन-कौन, ठीक-ठीक, मन-ही-मन, दूर-दूर, धीरे-धीरे, कहते-कहते।

4. निम्नलिखित वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए –

क. जो ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास न करता हो ।

ख. जो विश्वास करने योग्य न हो।

ग. किए गए उपकार को मानने वाला।

घ. तर्क से संबंधित।

ङ जो क्षमा करने योग्य न हो।

योग्यता विस्तार

1. प्रसाद जी की कोई अन्य कहानी खोजकर पढ़िए।
2. 'नीरा' कहानी का नाट्य रूपांतर करके कक्षा में अभिनय कीजिए।
3. इस कहानी में किस पात्र ने आपको अधिक प्रभावित किया है और क्यों? कक्षा में सुनाइए।
4. अमरनाथ के स्थान पर आप होते तो क्या करते? अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

शब्दार्थ

विरक्त – वैराग्य, उदासीनता ***मसखरा*** –हँसोड़, परिहासप्रिय, ***उज्ज्वल आलोक*** –चमकता हुआ प्रकाश, ***आत्मविस्मृत*** –अपने आपको भूल जाना, सुधबुध न रहना, ***अवलंबन*** –सहारा, ***मलिना*** –मैली, ***उत्कण्ठा*** –उत्सुकता, ***मुखाकृति*** – मुख की आकृति, रूपरंग, चेहरे के भाव ***तार्किक*** – तर्क के योग्य, तर्क युक्त, तर्क करने वाला, ***चरायँध*** –जलते हुए शरीर से निकलने वाली गंध, दुर्गंध, ***आतिथ्य*** – आवभगत, आतिथ्य, सत्कार, ***ऐश्वर्यशाली*** – ऐश्वर्य वाला, धनवान ***सृष्टिकर्ता*** –सृष्टि का निर्माण करने वाला, ***अच्छी युक्तियाँ*** – अच्छे तर्क, दलील, उचित विचार ***पुआल*** –धान का चारा, ***मॉरिशस*** –हिंद महासागर में एक द्वीप, ***धारणा*** – मान्यता, ***उच्छृंखल*** –उद्दण्ड, नियम, बंधन न मानने वाला ***प्रकृतिस्थ*** – सहज, ***अंतरात्मा*** – अंत:करण, ***पुलकित*** – प्रसन्नचित्त, आनंदित, हर्ष विह्वल, **प्रणत**–प्रणाम करने के लिए झुका हुआ।

* * *